P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-5* January- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उदयपुर ग्रामीण क्षेत्र में स्थित महाविद्यालयों के शिक्षण सन्तुष्टि स्तर का एक अध्ययन

A Study on Education Satisfaction Level of Colleges situated in Rural Areas of Udaipur District

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 27/01/2021, Date of Publication: 28/01/2021

हेमन्त कडूणिया
सहायक आचार्य,
लेखा एवं व्यावसायिक सांख्यिकी, वाणिज्य विभाग,
श्री सावंलियाजी राजकीय महाविद्यालय, मण्डफिया, जिला चित्तौड़गढ़, भारत

सारांश

शिक्षण संस्थाओं के विकास में विभिन्न घटक जैसे अवसंरचनात्मक सुविधायें, शिक्षकों का ज्ञान, विद्यार्थियों की इच्छाशक्ति इत्यादि महत्वपूर्ण स्थान रखते है। उदयपुर (राजस्थान) जिले ग्रामीण क्षेत्र में स्थित 9 राजकीय एवं 7 निजी महाविद्यालय के विद्यार्थियों से ईमेल, वाट्सएप्प द्वारा प्रश्नावली भरवाई गई। कुल 112 विद्यार्थियों से प्रत्युत्तर प्राप्त हुये जिनमें से 2 में त्रूटि होने से अस्वीकार कर दिया गया। प्रस्तुत शोध पत्र में शिक्षकों की कक्षा अध्यापन की तैयारी, संवाद कुशलता, अध्यापन के प्रति दृष्टिकोण का सन्तुष्टि स्तर,आन्तरिक मूल्यांकन में निष्पक्षता, एसाइनमेन्ट पर व्यक्तिशः चर्चा तथा उदाहरणों तथा अनुप्रयोगो का उपयोग इत्यादि घटकों का विद्यार्थी सन्तुष्टि स्तर पर सार्थक प्रभाव जांचा गया। इस हेतु काई वर्ग परीक्षण का उपयोग किया गया। यह पाया गया कि उपरोक्त घटक विद्यार्थी सन्तुष्टि स्तर पर सार्थक प्रभाव डालते है। अतः किसी शिक्षण संस्था के विकास हेतु शिक्षकों को उपरोक्त घटकों को विकसित करना चाहिए।

Various components like infrastructural facilities, knowledge of teachers, willpower of students, etc. have an important place in the development of educational institutions. Questionnaires were filled by email, WhatsApp from students of 9 state and 7 private colleges located in Udaipur (Rajasthan) district rural area. A total of 112 students received responses, out of which 2 were rejected due to errors. The research paper presented examined the meaningful impact of the student satisfaction level of the components of preparation of classroom teaching, communication skills, satisfaction level of attitude towards teaching, fairness in internal assessment, individual discussion on assignments and use of examples and applications. The Kai class test was used for this. It was found that the above components make a significant impact on the student satisfaction level. Therefore, teachers should develop the above components for the development of any educational institution.

मुख्य शब्द : शिक्षण सन्तुष्टि, उदयपुर ग्रामीण क्षेत्र, महाविद्यालय, उच्च शिक्षा
Education Satisfaction, Udaipur Rural Areas, Higher Education

प्रस्तावना

भारत की आधी आबादी गांवों में रहती है। आर्थिक विकास की दिशा में ग्रामीण भारत का योगदान किसी से छिपा नहीं है। भारतीय अर्थव्यवस्था में हो रही निरन्तर वृद्धि भारतीय सरकार को शिक्षा प्रणाली की सभी शाखाओं के विकास प्रक्रिया में तेजी लाने के लिये मजबूर करती है। भारतीय ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षा प्रणाली भी अर्थव्यवस्था की वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देती है। ग्रामीण शिक्षा को उच्च स्तर तक पंहुचाने का दायित्व विद्यालय स्तर तक ही सीमित न होकर महाविद्यालयों का भी है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित निजी अथवा राजकीय महाविद्यालयों के शिक्षकों का यह दायित्व बनता है कि वे उस क्षेत्र के शैक्षिक विकास में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाये। विद्यार्थी सन्तुष्टि स्तर किसी शिक्षण संस्था की भविष्य की प्रगति का द्योतक होती है। महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों की आंकाक्षाओं का स्तर विद्यालय से कहीं अधिक होता है। इसी कारण से महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की गतिविधियां एवं सुविधायें उपलब्ध करवाई जाती है। शिक्षा के साथ साथ महाविद्यालयों में ए

नएसएस, एनसीसी, रोवर रेन्ज, सह शैक्षणिक गतिविधियां इत्यादि करवाये जाने से विद्यार्थी न केवल शिक्षा अर्जन वरन अपना सर्वांगीण विकास करता है। वर्तमान में अधिकतर शिक्षण संस्थाओं द्वारा अपने विद्यार्थियों का सन्तुष्टि स्तर जानने का प्रयास किया जाता है। वे फीडबैक प्रश्नावलीयों का उपयोग करके विद्यार्थियों के सन्तुष्टि स्तर को ज्ञात कर कमियों को पूरा करने का पूर्ण प्रयास करते है।

महाविद्यालय स्तर पर शैक्षणिक गुणवत्ता भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भारत में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा महाविद्यालयों में आन्तरिक गुणवत्ता को आश्वस्त करने हेतु सभी महाविद्यालयों में आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ की स्थापना करवाई गई है। यह प्रकोष्ठ शिक्षा के साथ साथ महाविद्यालय की सभी गतिविधियों की गुणवत्ता को निर्धारित करता है। शिक्षकों द्वारा उपयोग में ली गयी शैक्षणिक तकनीकें, उनके पढ़ाने के तरीकों, नोट्स, विद्यार्थियों के साथ व्यवहार, अतिरिक्त शिक्षण सामग्री, शिक्षक द्वारा स्वयं का ज्ञान स्तर में अभिवृद्धि का प्रयास, छात्रों के सन्तुष्टि स्तर पर प्रभाव डालता है। महाविद्यालय स्तर पर उपलब्ध अवसंरचनात्मक सुविधायें जैसे भवन, स्टाफ कक्ष, स्मार्ट कक्षा कक्ष, लैब, कक्षा कक्ष साफ सफाई इत्यादि भी छात्रों के सन्तुष्टि स्तर पर प्रभाव डालती है। इसके साथ ही छात्रों का नियमित कक्षाओं में आना, पढ़ाई के प्रति रूचि, शिक्षक के साथ व्यवहार, महाविद्यालय के प्रति कर्तव्य भावना भी उनके सन्तुष्टि स्तर को प्रभावित करती है।

प्रस्तुत शोध में ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों का महाविद्यालय स्तर पर सन्तुष्टि स्तर मापने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य जिला चित्तौड़गढ में ग्रामीण क्षेत्र में स्थित निजी एवं राजकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का सन्तुष्टि स्तर ज्ञात करना है। इस हेतु निजी एवं राजकीय महाविद्यालय विद्यार्थियों से प्रश्नावली द्वारा प्रत्युत्तर प्राप्त किये गये।

श्रीकाथाचारी एवं नागाराजा (2013) ने अपनी शोध में भारत में वर्तमान ग्रामीण शिक्षा, शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा में अन्तर तथा ग्रामीण शिक्षा में अन्तर तथा ग्रामीण शिक्षा की विभिन्न प्रकार की समस्याओं को उजागर किया। लेखकों के अनुसार यदि 'व्यक्तियों की स्वीकार्यता एवं सहभागिता स्कीम' पर कार्य किया जाये तो ग्रामीण शिक्षा को सार्थक स्तर तक सुधारा जा सकता है।

चन्द्र रीतु (2018) के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्र भारत का मूल है। जड़ों का मजबूत करने के लिये शिक्षा के साथ साथ शैक्षिक मूल्यों को प्रगति देना महत्वपूर्ण है। ग्रामीण आबादी के ज्ञान को जगाने से विश्व परिदृश्यष्में हमारे राष्ट्र का विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।

क्षेत्र

उदयपुर जिले में 10 राजकीयएवं 7 निजी महाविद्यालय है। जिनमें से 9 राजकीयएवं 7 निजी महाविद्यालय ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित है। इन महाविद्यालयों के विद्यार्थियों से ईमेल, वाट्सएप्प द्वारा प्रश्नावली भरवाई गई। प्रश्नावली का प्रारूप राष्ट्रीय स्तर पर नैक मूल्यांकन हेतु विद्यार्थियों से पूछे जाने वाले विद्यार्थी सन्तुष्टि सर्वे के प्रश्नों को लिया गया ताकि ग्रामीण क्षेत्र के स्नातक विद्यार्थियों को भी नैक ग्रेडिंग प्रणाली की जानकारी विकसित हो सके। कुल 112 विद्यार्थियों से प्रत्युत्तर प्राप्त हुये जिनमें से 2 में त्रूटि होने से अस्वीकार कर दिया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. महाविद्यालय शिक्षा प्रणाली, शिक्षक एवं शिक्षण सुविधाओं का सन्तुष्टि स्तर पर प्रभाव ज्ञात करना।
2. शिक्षकों की कक्षा अध्यापन की तैयारी का सन्तुष्टि स्तर पर प्रभाव ज्ञात करना।
3. शिक्षकों की संवाद कुशलता का सन्तुष्टि स्तर पर प्रभाव ज्ञात करना।
4. शिक्षकों के अध्यापन के प्रति दृष्टिकोण का सन्तुष्टि स्तर परप्रभावज्ञात करना।
5. शिक्षकों की आन्तरिक मूल्यांकन में निष्पक्षता का सन्तुष्टि स्तर पर प्रभाव ज्ञात करना।
6. शिक्षकों द्वारा दिये गये एसाइनमेन्ट पर व्यक्तिशः चर्चा का सन्तुष्टि स्तर पर प्रभाव ज्ञात करना।
7. शिक्षकों द्वारा उपयोग में लिये गये उदाहरणों तथा अनुप्रयोगों का सन्तुष्टि स्तर पर प्रभाव ज्ञात करना।

शून्य परिकल्पना

H01: महाविद्यालय शिक्षा प्रणाली, शिक्षक एवं शिक्षण सुविधाओं का सन्तुष्टि स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

H02: शिक्षकों की कक्षा अध्यापन की तैयारी का सन्तुष्टि स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H03: शिक्षकों की संवाद कुशलता का सन्तुष्टि स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H04: शिक्षकों के अध्यापन के प्रति दृष्टिकोण का सन्तुष्टि स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H05: शिक्षकों की आन्तरिक मूल्यांकन में निष्पक्षता का सन्तुष्टि स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H06: शिक्षकों द्वारा दिये गये एसाइनमेन्ट पर व्यक्तिशः चर्चा का सन्तुष्टि स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

H07: शिक्षकों द्वारा उपयोग में लिये गये उदाहरणों तथा अनुप्रयोगों का सन्तुष्टि स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

समंक संकलन

कुल 112 विद्यार्थियों से प्रत्युत्तर प्राप्त हुये जिनमें से 3 में त्रूटि होने से अस्वीकार कर दिया गया। प्रश्नावली से प्राप्त प्रत्युत्तरों का विवरण निम्न प्रकार रहा

	पुरूष	**महिलायें**	**कुल**
विज्ञान स्नातक	8	11	19
वाणिज्य स्नातक	16	18	34
कला एवं अन्य स्नातक	38	19	57
कुल	62	48	**110**

उपरोक्त प्राप्त परिणामों पर काई वर्ग परीक्षण द्वारा सार्थकता जांच की गई

शोध

'कक्षा में कितना पाठ्यक्रम कवर किया गया था?' प्रश्न के परिणाम निम्न प्रकार रहे –

कवर किया गया पाठ्यक्रम	पुरूष	प्रतिशत में	महिला	प्रतिशत में	कुल	प्रतिशत में
85% से 100%	23	37.10	16	33.33	39	35.46%
70% से 84%	17	27.42	10	20.83	27	24.55%
55% से 69%	9	14.52	7	14.58	16	14.55%
30% से 54%	4	6.45	9	18.75	13	11.82%
30% से कम	9	14.52	6	12.50	15	13.62%
	62		**48**		**110**	

जब उत्तरदाताओं से शिक्षकों द्वारा पाठ्यक्रम पूर्ण करवाने के बारे में पुछा गया तो 35 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि शिक्षको द्वारा लगभग पाठ्यक्रम को पूरा करा लिया गया था, जबकि 25 प्रतिशत के अनुसार पूर्णता प्रतिशत 70 प्रतिशत से अधिक था। 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर गणित मूल्य 21.81 सारणी मूल्य से अधिक होने के कारणशून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतःइस प्रकार निश्चित ही यह कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम की पूर्णता का प्रतिशत निश्चय ही विद्यार्थी को सन्तुष्ट करता है और वह कक्षाओं में निरन्तर उपस्थित होना पसन्द करता है।

'आपके अनुसार शिक्षकों ने कक्षा अध्यापन के लिये कितनी अच्छी तैयारी की?' प्रश्न के परिणाम निम्न प्रकार रहे –

शिक्षकों द्वारा शिक्षण तैयारी	पुरूष	प्रतिशत में	महिला	प्रतिशत में	कुल	प्रतिशत में
पूर्णतया	40	64.52	34	70.83	74	67.27%
संतोषजनक	17	27.42	13	27.08	30	27.27%
बहुत कम	4	6.45	1	2.08	5	4.55%
उदासीनता से	–		–		–	–
कोई तैयारी नहीं	1	1.61	–		1	0.91%
	62		**48**		**110**	

जब छात्रों से शिक्षकों द्वारा कक्षा अध्यापन के लिये तैयारी के बारे में पुछा गया तो 67 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि उनके अनुसार शिक्षकों द्वारा कक्षा पूर्ण तैयारी की गई थी, जबकि 27 प्रतिशत के अनुसार कक्षा हेतु तैयारी संतोषजनक थी। 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर गणित मूल्य 181 सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः इस प्रकार निश्चित ही यह कहा जा सकता है कि कक्षा हेतु शिक्षकों की तैयारी का प्रतिषत निश्चय ही विद्यार्थी को सन्तुष्ट करता है और वह कक्षाओं में निरन्तर उपस्थित होना पसन्द करता है।

'शिक्षक कितनी अच्छी तरह से संवाद करने में सक्षम थे?' प्रश्न के परिणाम निम्न प्रकार रहे –

संवाद सक्षमता पर विचार	पुरूष	प्रतिशत में	महिला	प्रतिशत में	कुल	प्रतिशत में
हमेशा प्रभावी	45	72.58	41	85.42	86	78.18%
कभी कभी प्रभावी	5	8.06	4	8.33	9	8.18%
सन्तोषजनक	4	6.45	2	4.17	6	5.45%
आम तौर पर अप्रभावी	3	4.84	–	0	3	2.73%
बहुत खराब संचार	5	8.06	1	2.08	6	5.45%
	62		**48**		**110**	

जब उत्तरदाताओं से शिक्षकों संवाद कुषलता के बारे में पुछा गया तो 78प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि उनके अनुसार शिक्षकों का संवाद पूर्णतया संतोषतनक था, जबकि 13 प्रतिशत के अनुसार शिक्षकों का संवाद एक स्तर तक संतोषतनक था। 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर गणित मूल्य 233 सारणी मूल्य से अधिक होने के कारण शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः शिक्षकों में संवाद कुशलता का विकास विद्यार्थियों के सन्तुष्टि स्तर में सार्थक वृद्धि करता है।

'अध्यापन के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण' प्रश्न के परिणाम निम्न प्रकार रहे –

दृष्टिकोण के प्रति विद्यार्थियों का अनुभव	पुरूष	प्रतिशत में	महिला	प्रतिशत में	कुल	प्रतिशत में
बहुत अच्छा	37	59.68	30	62.50	67	60.91%
अच्छा	13	20.97	9	18.75	22	20.00%
ठीक	6	9.68	3	6.25	9	8.18%
उचित	2	3.23	3	6.25	5	4.55%
खराब	4	6.45	3	6.25	7	6.36%
	62		**48**		**110**	

जब विद्यार्थियों से शिक्षकों के अध्यापन के प्रति दृष्टिकोण के बारे में पुछा गया तो 61 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि उनके अनुसार अध्यापन के प्रति शिक्षकों का रवैया बहुत अच्छा था, जबकि 28 प्रतिशत के अनुसार अध्यापन के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण ठीक अथवा अच्छा था। 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर गणित मूल्य 123 सारणी मूल्य से बहुत अधिक होने के कारण शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः यदि शिक्षक शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है तो निश्चय ही यह विद्यार्थियों के लिये अध्ययन रूचिकर बनाने में सक्षम होगा।

'शिक्षकों द्वारा आन्तरिक मूल्यांकन प्रक्रिया में निष्पक्षता' प्रश्न के परिणाम निम्न प्रकार रहे –

निष्पक्षता स्तर	पुरूष	प्रतिशत में	महिला	प्रतिशत में	कुल	प्रतिशत में
हमेषा निष्पक्ष	37	59.88	32	66.67	69	62.73%
आमतौर पर निष्पक्ष	14	22.58	7	14.58	21	19.09%
कभी कभी अनुचित	5	8.06	3	6.25	8	7.27%
आमतौर पर अनुचित	4	6.45	3	6.25	7	6.36%
अनुचित	2	3.23	3	6.25	5	4.55%
	62		**48**		**110**	

जब विद्यार्थियों से शिक्षकों के आन्तरिक मूल्यांकन प्रक्रिया में निष्पक्षता के बारे में पुछा गया तो 81.82 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि उनके अनुसार शिक्षक के आन्तरिक मूल्यांकन प्रक्रिया में निष्पक्ष थे। 10.91प्रतिशत विद्यार्थियों ने कभी कभी अनुचित मूल्यांकन किये जाना बताया।5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर गणित मूल्य 132.72 सारणी मूल्य से अत्यधिक होने के कारण शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः शिक्षकों की आन्तरिक मूल्यांकन प्रक्रिया में निष्पक्षता विद्यार्थियों का विश्वास अर्जन पर प्रभाव डालती है।

शिक्षकों द्वारा एसाइनमेन्ट प्रदर्शन पर चर्चा

एसाइनमेन्ट पर चर्चा	पुरूष	प्रतिशत में	महिला	प्रतिशत में	कुल	प्रतिशत में
हर बार	34	54.84	26	54.17	60	54.55%
आमतौर पर	8	12.90	8	16.67	16	14.55%
कभी कभी	5	8.06	4	8.33	9	8.18%
शायद ही कभी	9	14.52	7	14.58	16	14.55%
कभी नहीं	6	9.68	3	6.25	9	8.18%
	62		**48**		**110**	

जब विद्यार्थियों से शिक्षकों द्वारा दिये गये एसाइनमेन्ट पर व्यक्तिशः प्रदर्शन के बारे में पुछा गया तो 70.10प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि उनके अनुसार शिक्षकों ने उनके द्वारा दिये गये एसाइनमेन्ट पर प्रदर्शन पर व्यक्तिशः चर्चा की गयी थी। 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर गणित मूल्य 84.27 सारणी मूल्य से अत्यधिक होने के कारण शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि एसाइनमेन्ट प्रर्दशन पर चर्चा किये जाने से भी विद्यार्थी सन्तुष्टि स्तर पर प्रभाव पड़ता है।

शिक्षकों द्वारा उदाहरण और अनुप्रयोगों के माध्यम से अवधारणाओं का वर्णन

उदाहरणों एवं अनुप्रयोगो का उपयोग	पुरूष	प्रतिशत में	महिला	प्रतिशत में	कुल	प्रतिशत में
हर बार	46	74.19	35	72.92	81	72-92%
आमतौर पर	7	11.29	5	10.42	12	10.42%
कभी कभी	4	6.45	4	8.33	8	8.33%
शायद ही कभी	4	6.45	4	8.33	8	8.33%
कभी नहीं	1	1.61	—	—	1	0.91
	62		**48**		**110**	

जब विद्यार्थियों से शिक्षकों द्वारा अध्यापन में उदाहरणों एवं अनुप्रयोगो का उपयोग किये जाने के बारे में पुछा गया तो 84.55 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि शिक्षकों द्वारा अध्यापन में उदाहरणों एवं अनुप्रयोगो का उपयोग किया गया था। 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर गणित मूल्य 200.64 सारणी मूल्य से बहुत अधिक होने के कारण शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः यदि शिक्षकों द्वारा अध्यापन में उदाहरणों एवं अनुप्रयोगो का उपयोग किया जाये तो विद्यार्थियों के सन्तुष्टि स्तर में वृद्धि होती है।

References

1. *Sheekanthachari, J.G. and Nagaraja, G. (2013), An overview of rural education in India, adv. Res. J. Soc. Sci., 4(1) : 115-119*
2. *4_115-119.pdf (researchjournal.co.in)*
3. *Problems Associated with Education in Rural Areas in India (yourarticlelibrary.com)*
4. *DCE (rajasthan.gov.in)*
5. *www.rural.nic.in*
6. *www.drd.nic.in*
7. *www.nariphaltan.org/gandhitalk.pdf*
8. *www.en.wikipedia.org/wiki/Rural_development*
9. *www.ssa.nic.in/*
10. *www.righttoeducation.in/*
11. *www.sites.miis.edu/sierratan/files/2013/03/Quality-vs.-Quantity_Full-Text.pdf*
12. *www.en.wikipedia.org/wiki/Education_in_India*